Give more- Get more

इस हाथ दे, इस हाथ ले

मेक मी हेविन, मेक मी हेविन, मेक मी हेविन आज ये आवाज न केवल उसके कानों में गूँज रही थी बल्कि उसके अर्न्तमन को इस कदर झकझोर रही थी कि उसे महसूस हो रहा था मात्र इतने भर से काम नहीं चलेगा। उसे अपने प्रयासो को ओर अधिक तेज करना होगा। ये मां की आवाज है धरती मां की आवाज। जो हम सभी का प्यारा सा ग्रह है जिस ग्रह पर सारा विश्व समाया है। ये ग्रह निरन्तर दे रहा है देता आया है। आज इसने महसूस किया है कि उसे उसका खोया हुआ स्वरुप मिले। उसे उसका वही गैरव पूर्ण स्वर्गिक रुप मिले। जिससे निरन्तर हमने लिया है और बिगड़े हालातो में भी हम निरन्तर उससे ले रहे है। आज उसने हमारे सहयोग की आवश्यकता को महसूस कर हमें आवाज दी है ''मेक मी हेविन,,

वस्तुत: ये आवाज भी हम सबके लिए है। इस पृथ्वी ग्रह का आज का स्वरुप भी हम सभी के लिए और इसका स्वर्गिक रुप भी हम सभी के लिए होगा। आज उसकी महान दृष्टि ने अन्दर तक झांक कर धरती मां के दर्द और जरुरत को महसूस किया इसलिए उसने इसे पूरा करने का मन बना लिया था। और फिर यह आवाज भी तो सामयिक है। किसी भी अच्छे कार्य को पूर्ण करने के लिए उसकी शुरुआत का मूहूर्त निकलवाते है। समय नक्षत्रो के संदर्भ में शुभ अशुभ का विचार करते हुए कार्य का प्रारम्भ करते है। अब यह आवाज ''मेक मी हेविन,, जो चारो ओर गूँज रही है यह समय के सापेक्ष है। धर्मावलम्बियों के अनुसार चारो युगों से चक्र लगाती यह सृष्टि कलियुग अन्त के समय में है। प्रर्यावरणविदो की दृष्टि में प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ा है ओर प्रकृति के तत्वो के बीच ये असन्तुलन की स्थिति महाविनाश को दस्तक दे रही है। वैज्ञानिको ने वह सब सुलभ करा दिया है, चाहे तो विज्ञान को अन्त का आधार बना दे, चाहे स्वर्ग के नजारो को रचने में काम में लगा लें। आध्यात्मविदो की दृष्टि में व्यक्ति के मूल्यों का पतन हुआ है। ऐसी स्थिति में शक्तियों के दुरुपयोग की सम्भावनाएं बढ़ी है। ऐसी स्थितियों मे धरती मां की पुकार सामयिक है। हम काल के मुंह मे कालकल्वित हो जाये उसके पूर्व ही हमें जागना होगा। और आज उसने इस बात को भी भली भांति अनुभव कर लिया है। अब देर करना खतरे को आमन्त्रण देना है। खतरो के बीच इस आवाज को पूरा करना सम्भव नहीं होगा। अत: अब उसने ठान लिया है कि वैश्विक स्तर पर मुझे अपने प्रयासो को इतना

तेज करना है कि कोई भी इस आवाज से अनभिज्ञ न रहे। कोई भी इस आवाज से अनजाना न रहे। इस आवाज के साथ जुड़े अपने अन्तर दायीत्वों को पूरा करने के लिए हर किसी को समय व अवसर मिले। क्योंकि यह ग्रह हम सबका है हम सबके लिए है। आज उसके अन्दर का मानव जाग उठा है। सच्चे अर्थो

मे वह रोल मॉडल बनने की तरफ कदम बढ़ा चुका है। आज उसे यह बोध हो गया है वह रोल मॉडल मै ही हूँ जिसे अपनी धरती मां का गौरव लौटाना है, इसी स्मृति के साथ वह उठ खड़ा हुआ। उसने ईश्वर की ओर देखा और आगे कदम बढ़ा दिये। वह जानता था कि यह कार्य कोई इतना आसान नहीं है। लोग उसे पागल कह सकते है। ख्याली पुलाव को पूरा करने के लिए एनर्जी को वेस्ट करना कह सकते है। स्वर्ग में सीढ़ी लगाने की कल्पना कह सकते है। इतना सब जानते हुए भी उसने अपने इरादों को आज दृढ़ कर लिया था। उसे किसी भी सन्दर्भ में संशय नही था। पूर्ण निश्चयात्मक बुद्धि होने के पीछे उसने कुछ हकीकतो को गहराई तक समझ लिया था।

एक तो यह पुकार धरती मां की ही थी जो उसने दिल से लगाई थी। दूसरा यह सामयिक थी इसलिए इसे पूरा करना समयानुकूल था। तीसरा इसे पूरा करने के लिए सतत ऊर्जा और मार्ग दर्शना की जरुरत थी। इस सबको पूरा करने के लिए ईश्वर का उसे

साथ प्राप्त था। और यह सब पाने का सहज साधन उसे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रुप में मिल गया था। चौथा उसे स्वयं पर इतना भरोसा था कि जिस बात को उसने स्वीकार कर लिया वह ईश्वर की मदद से पूरा होना ही है। उसका इस बात मे निश्चय कि मैंने कल्प-कल्प इस कार्य को किया है, यह उसकी ऊर्जा का अक्षय भण्डार था। और फिर वह '' इस हाथ दे- इस हाथ ले,, के सिद्धान्त का इतना अनुभवी था कि जितना ही अपनी शक्तियों, गुणों, साधनों, क्षमताओं, विशेषताओ, समय, संकल्प का उपयोग धरती को स्वर्ग बनाने में लगायेगे उतना ही से सब बढ़ते जायेगें। यह अनुभव उसमें निरन्तर जीवन्तता भर रहा था उसके जीवन की अदभुत विशेषताए उसे अन्य लोगों से अलग रोल मॉडल के रुप मे खड़ा कर रही थी। जिसको उसने भी भली भॉति महसूस कर लिया था। वह कोई ओर नही मैं ही था। उसके अन्दर के मैं ने अपने सत्य स्वरुप को जगा लिया था। इसलिए ही वह आज अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए आतुर था। वह इस बात को भी अच्छी रिति समझ रहा था कि यह यात्रा मेरे अकेले की नहीं हैं लेकिन उसका स्वयं में विश्वास उसके अन्दर को सशक्त बना रहा था। साथ ही उसने अपने अन्दर की एक ओर विशेषता को काम मे लगाने का मन बना लिया था। उसमें जो सबके गुण देखने की विशेषता थी, लोगों की क्षमताओ को अनुभव करते हुए उन्हें भी सहयोगी बनाने की कला थी, सम्मान पूर्ण व्यवहार से हर किसी को अपना बनाने की कला थी उसकी इन सब विशेषताओ ने उसे सच्चे अर्थो में न केवल रोल मॉडल बनाया था बल्कि इस बात की ओर स्पष्ट इशारा दे दिया था कि रोल मॉडल कैसे अपनी योजनाओं को अंजाम देते है, वे कैसे सबके प्रिय बन रोल मॉडल के रुप में जाने जाते है। कैसे वे सच्चे अर्थो में सर्व के शुभ चिन्तक होते हैं। उसके अन्दर के इन आध्यात्मिक व जीवन मूल्यों ने ऐसी तस्वीर पेश की थी कि रोल मॉडल को कैसा होना चाहिये। ऐसा होने पर ही वे लोगों को मोटीवेट कर पाते हैं। ऐसा होने पर ही वे देश दुनियां को वो दे पाते है जिसकी उन्हें जरुरत होती है और आज तो वे उस सबसे वड़ी जरुरत को पूरा करने जा रहे है जो न केवल धरती मां की जरुरत है बल्कि हम सबकी जरुरत है, न केवल धरती पर रह रहे हर मानव की, बल्कि जड़ चेतन सभी की जरुरत है। विश्व में कहां भी रह रहे हर प्राणी की जरुरत है। वास्तव मे धरती मां की पुकार के रुप मे ये हम सबकी जरुरत है। जो हम सभी को पूरी करनी है ये पूरी होनी ही है क्योंकि यह पहले भी पूरी हुई थी आज इसकी जरुरत पुन: महसूस हुई है। इसलिए फिर से पूरी होनी ही है। और हम सबको मिलकर पूरी करनी है। तो आओ करें संकल्प कि मुझे रोल मॉडल बन धरती मां की आवाज '' मेक मी हेविन,, को पूरा करना ही है।

बी.के सुधीर कुमार
शांतिवन